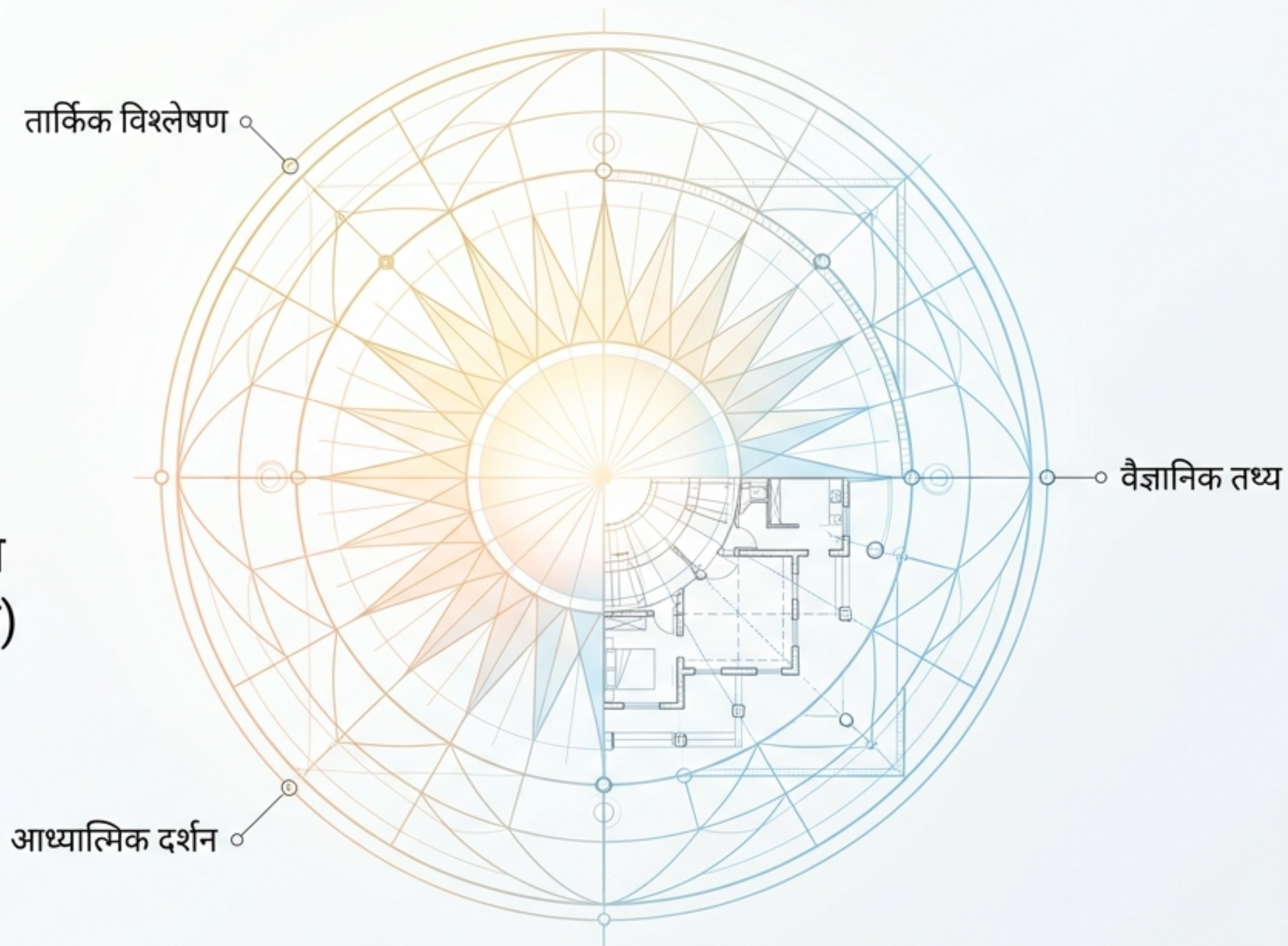


इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य

विज्ञान, अध्यात्म और युग-परिवर्तन का
ब्लूप्रिंट (अध्याय ५ से ९ का सार-संक्षेप)

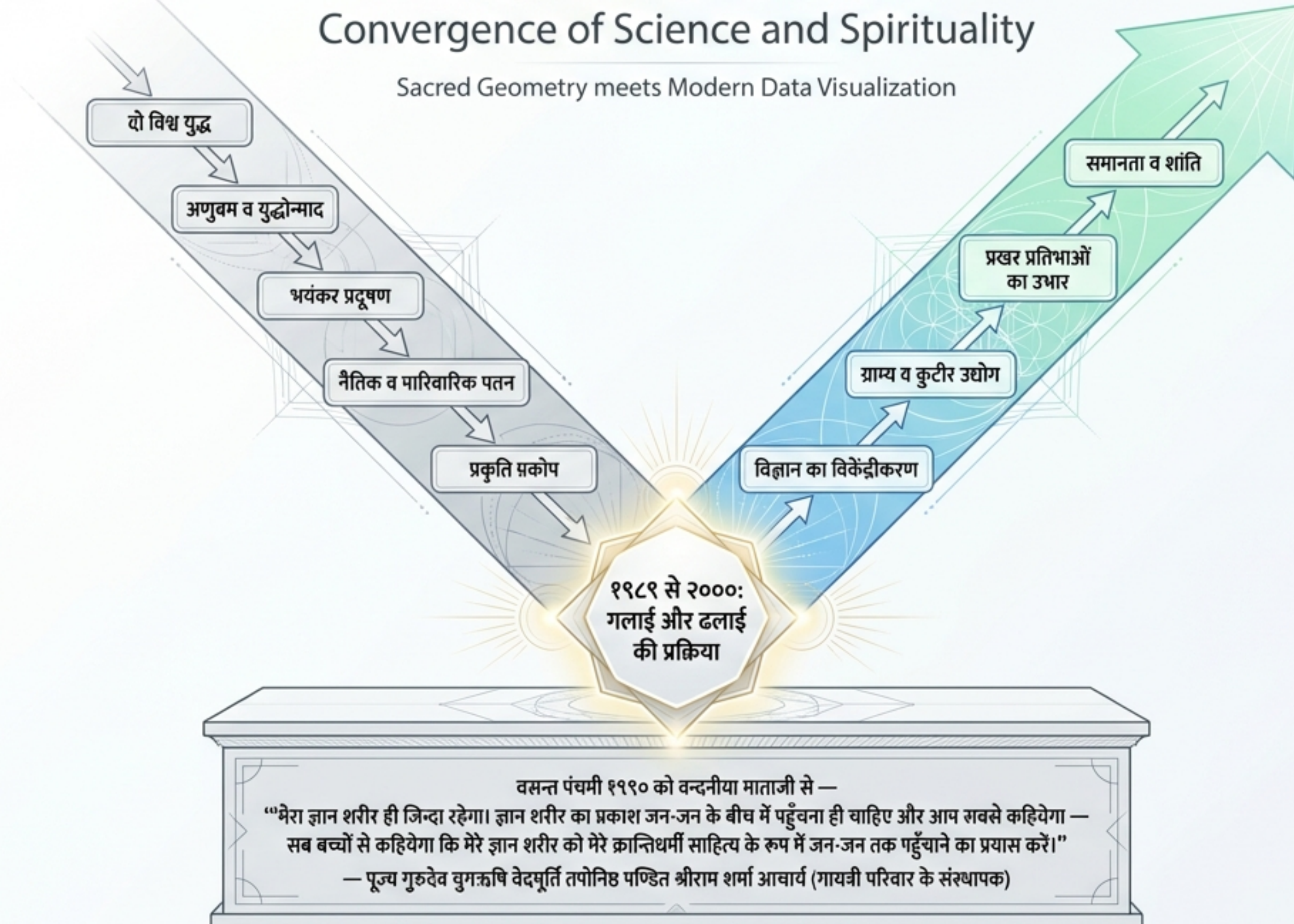


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

Dawn of a New Era

Convergence of Science and Spirituality

Sacred Geometry meets Modern Data Visualization



बुद्धि बल

विज्ञान, कला, और साहित्य पर एकाधिकार।
(स्वार्थ और अहंकार पर आधारित)

शासन सत्ता

व्यवस्था, सुरक्षा, और राजनैतिक नियंत्रण।

शक्ति का
क्रमिक विकास

धन शक्ति

उद्योग, बैंक और निजी संग्रह की होड़।

चौथी शक्ति: प्रखर प्रतिभा

उत्कृष्ट भाव संवेदनाएँ, आदर्शों के प्रति
निष्ठा, श्रद्धा, प्रज्ञा और लोक मंगल की भावना।
(परमार्थ पर आधारित)

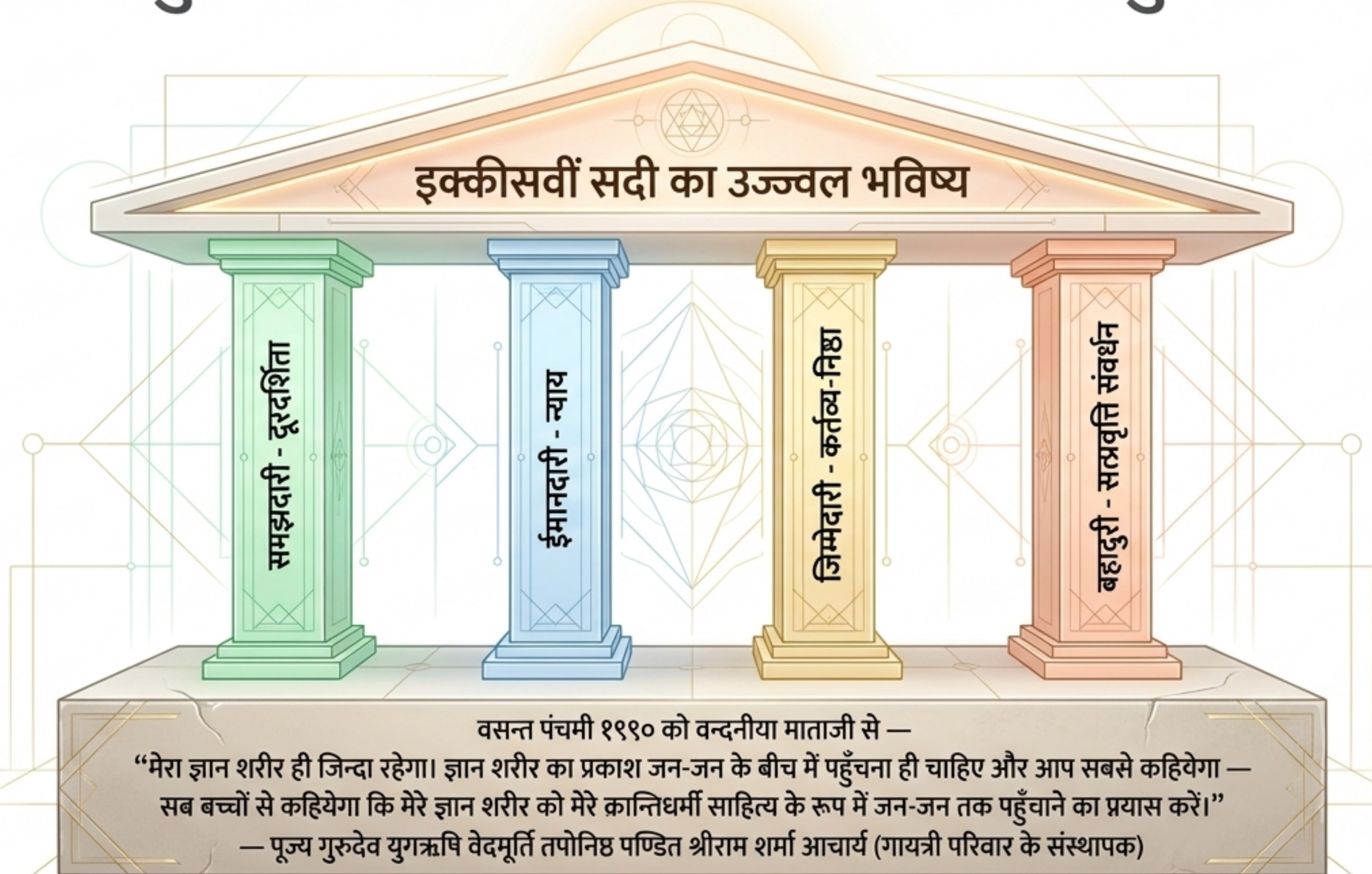
वसन्त पंचमी १९९० को

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा – मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



नवयुग का नीतिशास्त्र: चार चरण वाला युग-धर्म



युग-धर्म	वर्तमान पतन	नवयुग की परिभाषा
समझदारी	तात्कालिक लाभ के लिए टूट पड़ना।	दूरगामी परिणामों का विचार कर कदम उठाना।
ईमानदारी	स्वयं के लिए कुछ, दूसरों के लिए कुछ और नियम।	‘आत्मवत् सर्व भूतेषु’ - जो व्यवहार स्वयं को पसंद नहीं, वह दूसरों के साथ न करना।
जिम्मेदारी	केवल व्यक्तिगत अधिकारों की मांग।	‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ - नागरिक, पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों का निर्वाह।
बहादुरी	दुर्बलों का दमन और शोषण।	दुष्प्रवृत्तियों से जूझना और सत्प्रवृत्तियों को संगठित करना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
 “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
 युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
 पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
 (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अगली शताब्दी का अधिष्ठाता (भौतिक विज्ञान): सूर्य



दूरी का संतुलन: सटीक दूरी ही पृथ्वी पर अद्वितीय जीवन का मूल कारण है।



रंग और रसायन: सूर्य रसायनों का निर्माता है (सोडियम, कैल्शियम, आयरन आदि सूर्य प्रभा का उत्पाद हैं)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



जीवनी शक्ति: ऊतक, हार्मोन और विटामिन का निर्माण सूर्य के प्रभाव की प्रतिक्रिया है।

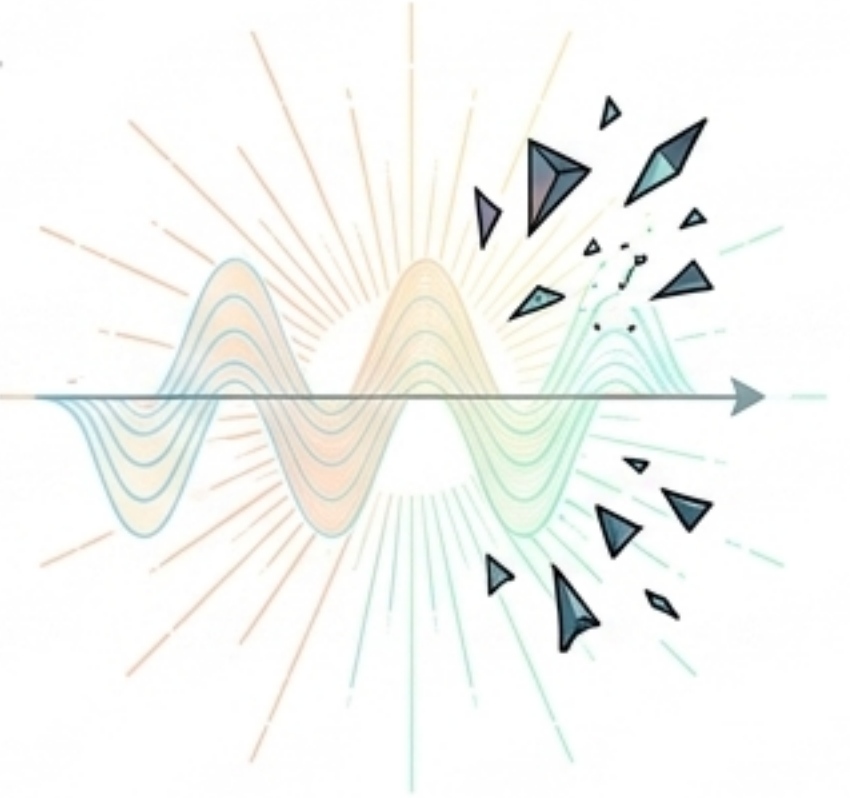


भविष्य की ऊर्जा: जीवाश्म ईंधन का एकमात्र अंतिम और स्थायी विकल्प: सौर ऊर्जा।

Input

Process

Output



आवाहन

कायाकल्प

विकिरण

स्वर्णिम सविता का ध्यान।
प्राण शक्ति का आकर्षण।

सूर्य ऊर्जा का शरीर में प्रवेश। काया चंद्रमा
के समान शीतल और अमृतमय बनती है
(गायत्री / सविता महामंत्र का प्रभाव)।

साधक से निकलने वाला अमृत-प्रकाश
रेडियोधर्मिता और अवांछनीयताओं
को नष्ट करता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचाना चाहिए और आप सबसे
कठिने — सब बुराई से कहिये कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे कान्तिधर्म साहित्य
के रूप में जन-जन को प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगक्रांति वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

महाकाल की संकल्पित सम्भावनाएँ: वृहद परिवर्तन

राजनैतिक गियर: सत्ता का विकेंद्रीकरण

पंचायत और ग्राम स्वराज्य का उदय;
निरीह-पिछड़ों के हाथों में शक्ति।

शैक्षणिक गियर: साक्षरता क्रांति

‘ईच वन, टीच वन’ - प्रत्येक शिक्षित
व्यक्ति द्वारा अशिक्षितों को साक्षर
बनाने की बाध्यता।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

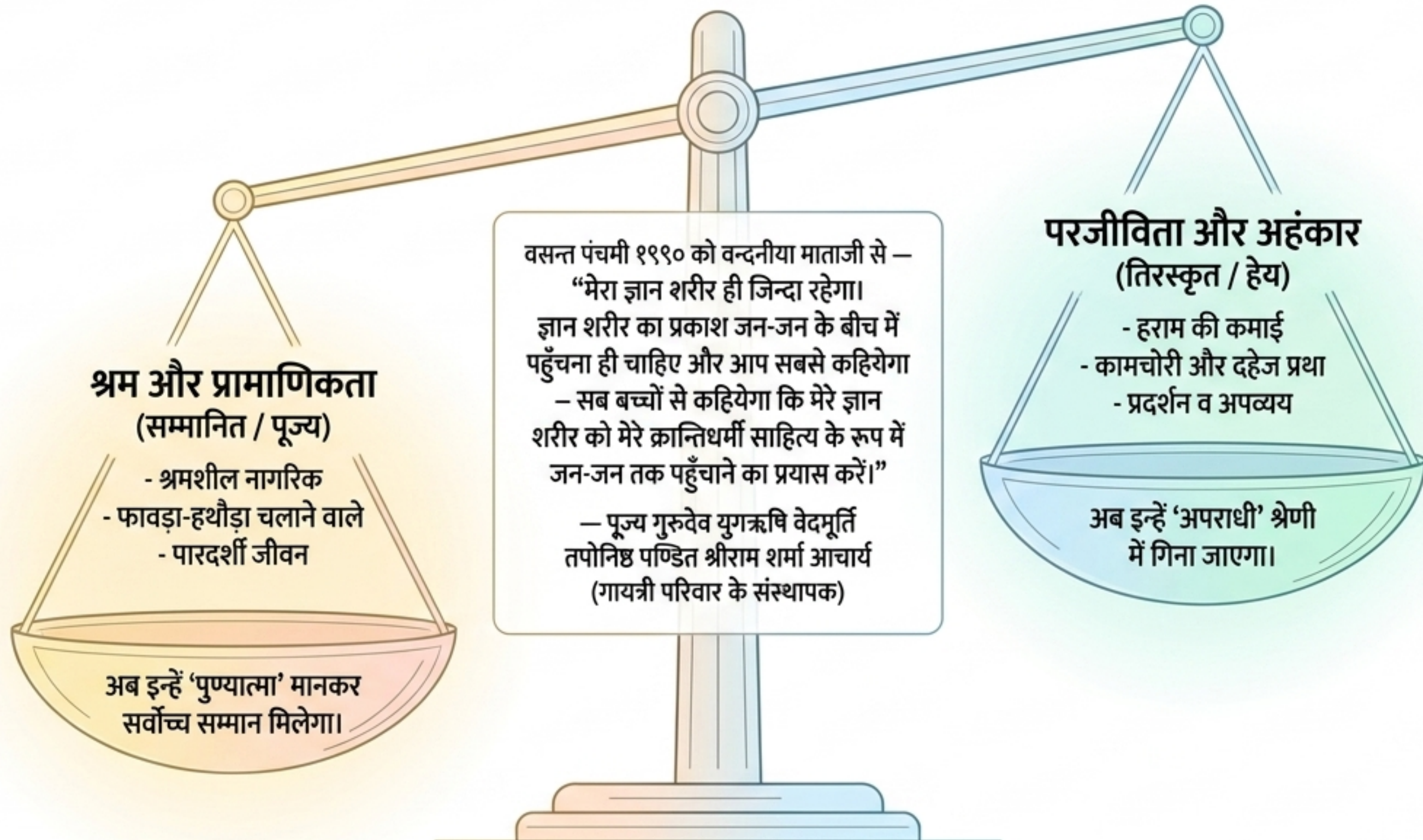
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

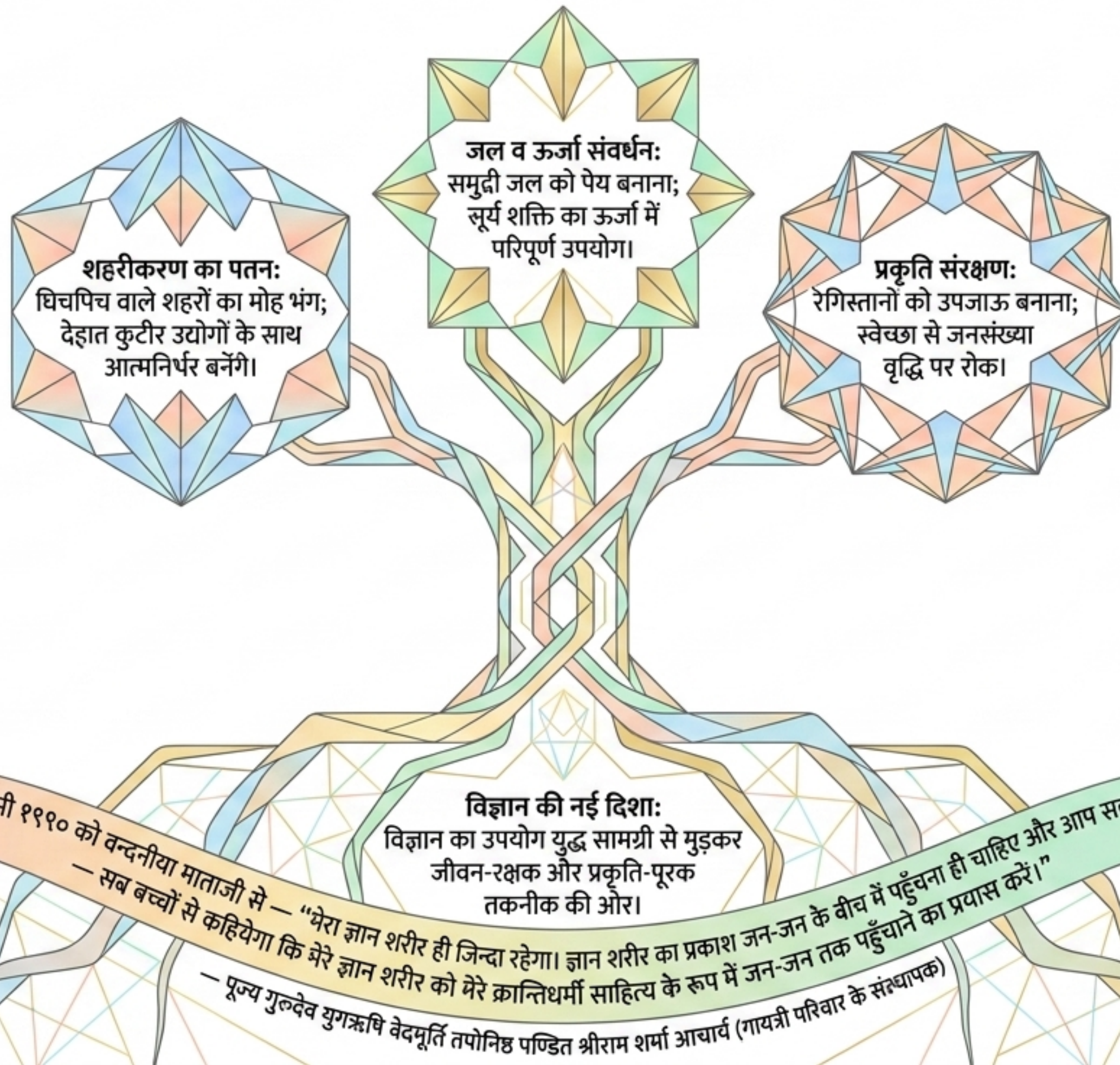
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आर्थिक गियर: सहकारिता आंदोलन

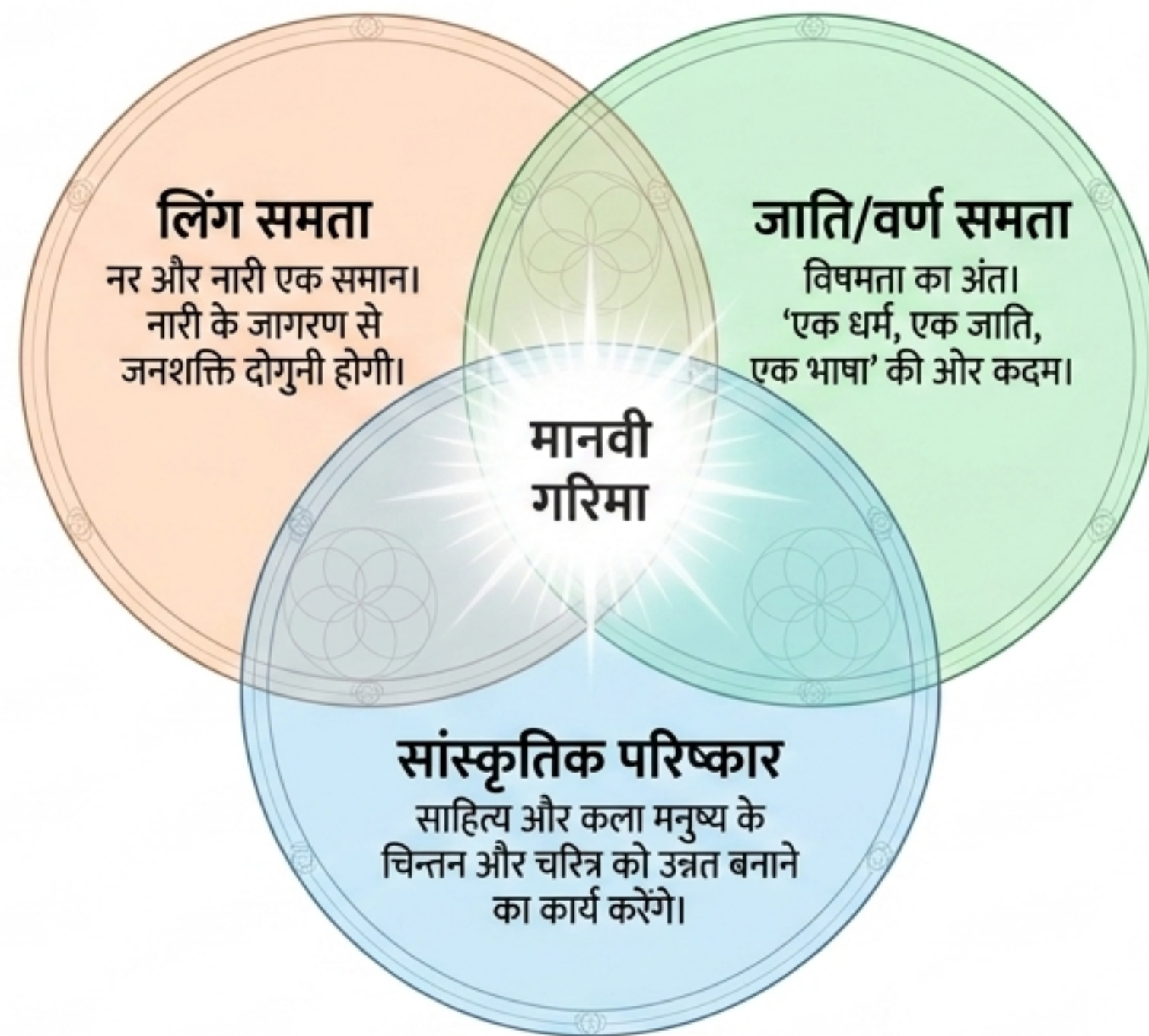
बिचौलियों का अंत; उपभोक्ता और
उत्पादक का सीधा संपर्क (९४% शोषण
की समाप्ति)।

मूल्यों का महा-परिवर्तन: श्रम बनाम परजीविता



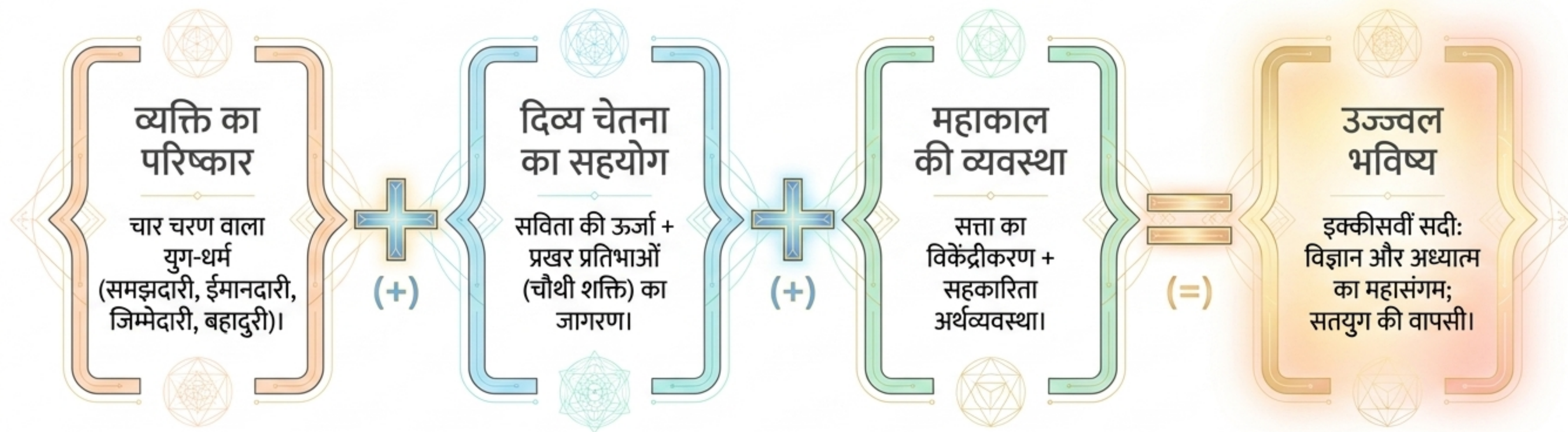


समता और एकता का नया समाज



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



महाक्रान्ति: नवयुग का समुद्र मन्थन



अध्यात्म (देवता) - भाव संवेदनाएँ

प्रकृति (मन्दराचल)

१४ रत्न - १४ नए आदर्श, तकनीक और सामाजिक व्यवस्थाएँ प्रकट होंगी।

विज्ञान (दैत्य) - तर्क और तथ्य

मानवी उत्साह व पुरुषार्थ (वासुकि)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आह्वान: नव-सृजन के शिल्पी बनें

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

- यह मात्र एक नारा नहीं, महाकाल का संकल्प है। जो अड़ेंगे, वे नष्ट होंगे; जो साथ चलेंगे, वे देवमानव कहलाएंगे।
- अपनी प्रखर प्रतिभा को जगाएं और ‘हम बदलेंगे, युग बदलेगा’ के ऐतिहासिक महाअभियान का हिस्सा बनें।
- समयदान और अंशदान—यही नवयुग के निर्माण की नींव है।